

1 व्यवहार वाद कमांक:-27ए/2015

**न्यायालय— अतिरिक्त व्यवहार न्यायाधीश वर्ग—1, गोहद जिला भिण्ड मध्यप्रदेश
(समक्ष— प्रतिष्ठा अवस्थी)**

व्यवहार वाद क. 27ए/2015

संस्थापित दिनांक 04.03.2013

फाईलिंग नम्बर 230303003562013

1. केवल सिंह पुत्र प्रानसिंह उर्फ पिरने आयु 55 वर्ष
2. कलियान सिंह पुत्र प्रानसिंह उर्फ पिरने आयु 65 वर्ष
3. फूलसिंह पुत्र खरगे उम्र 45 वर्ष
4. जगन्नाथ पुत्र खरगे आयु 35 वर्ष
5. श्रीमती गोमती बाई वेवा पत्नी खरगे आयु 70 वर्ष
6. महाराज सिंह पुत्र नादरी आयु 50 वर्ष
7. रामसेवक पुत्र नादरी आयु 45 वर्ष
8. मोहनसिंह पुत्र नादरी आयु 42 वर्ष
9. जयश्रीराम पुत्र नादरी आयु 35 वर्ष
10. श्रीमती बैजन्तीबाई वेवा पत्नी नादरी जाटव आयु 70 वर्ष
- निवासीगण— ग्राम ककरारी का पुरा, ग्राम पंचायत—टुडीला, गोहद जिला भिण्ड
11. सुज्जानी पत्नी पुरुषोत्तम जाटव
निवासी— भहुरी का पुरा गोहद जिला भिण्ड
12. पानसिंह पुत्र रामचरन जाटव
निवासी— कटुआ हाजी गोहद जिला भिण्ड

..... वादीगण

बनाम

1. मुन्नालाल पुत्र भवानी आयु 45 वर्ष
2. अमरसिंह पुत्र भवानी आयु 45 वर्ष
3. रामचरन पुत्र भोगीराम जाटव उम्र 65 वर्ष
- निवासीगण— ग्राम ककरारी का पुरा, ग्राम पंचायत टुडीला गोहद जिला भिण्ड
4. मुलायम खों पुत्र इलाही बक्स आयु 50 वर्ष
निवासी— ग्राम इकाहरा गोहद जिला भिण्ड
5. म0प्र0 शासन द्वारा— कलेक्टर महोदय, जिला भिण्ड

..... प्रतिवादीगण

वादीगण द्वारा — अधिवक्ता श्री जी0एस0 निगम
प्रतिवादी क0 1 लगायत 3 द्वारा — अधिवक्ता एम0पी0एस0 राणा
प्रतिवादी क0 4 द्वारा — अधिवक्ता आर0पी0एस0 गुर्जर
प्रतिवादी क0 5— एक पक्षीय

2 व्यवहार वाद क्रमांक:-27ए/2015

:- निर्णय :-

(आज दिनांक 15/05/18 को घोषित किया)

वादीगण द्वारा यह वाद प्रतिवादीगण के विरुद्ध मौजा इकाहरा में स्थित वादग्रस्त भूमि सर्वे क्र० 82 रकबा 0.280, सर्वे क्र० 83 रकबा 0.840, सर्वे क्र० 85 रकबा 0.350, सर्वे क्र० 98 रकबा 0.550, सर्वे क्र० 209 रकबा 0.140, सर्वे क्र० 211 रकबा 0.060, सर्वे क्र० 815 रकबा 1.30 तथा मौजा उटीला में स्थित वादग्रस्त भूमि सर्वे क्र० 137 रकबा 0.23, सर्वे क्र० 138 रकबा 0.15, सर्वे क्र० 139 रकबा 0.21, सर्वे क्र० 140 रकबा 0.22, सर्वे क्र० 638 रकबा 0.10, सर्वे क्र० 639 रकबा 0.81 के 1/6-1/6 भाग की स्वत्व घोषणा एवं स्थाई निषेधाज्ञा प्राप्त करने हेतु प्रस्तुत किया गया है।

2. संक्षेप में वादपत्र इस प्रकार है कि मौजा इकाहरा में भूमि सर्वे क्र० 82 रकबा 0.280, सर्वे क्र० 83 रकबा 0.840, सर्वे क्र० 85 रकबा 0.350, सर्वे क्र० 98 रकबा 0.550, सर्वे क्र० 209 रकबा 0.140, सर्वे क्र० 211 रकबा 0.060, सर्वे क्र० 815 रकबा 1.30 स्थित है जिसके बंदोबस्त के पूर्व के सर्वे क्र० 66/02, 61/810, 496/04 एवं सर्वे क्र० 270 थे। तथा मौजा उटीला में स्थित वादग्रस्त भूमि सर्वे क्र० 137 रकबा 0.23, सर्वे क्र० 138 रकबा 0.15, सर्वे क्र० 139 रकबा 0.21, सर्वे क्र० 140 रकबा 0.22, सर्वे क्र० 638 रकबा 0.10, सर्वे क्र० 639 रकबा 0.81 स्थित है जिसके बंदोबस्त के पूर्व सर्वे क्र० 38, 472 एवं 458 थे। उक्त भूमि वादी क्र० 1 व 2 के पिता तथा वादी क्र० 3, 4, 6, 7, 8 एवं 9 के बाबा तथा वादी क्र० 5 एवं 10 के ससुर पिरने उर्फ प्रांसिंह उर्फ बिरखे के स्वत्व एवं आधिपत्य की थी पिरने के चार वारिश खरगे, नादरी, कोमल सिंह एवं कल्यान सिंह थे जिनमें से केवलसिंह एवं कल्यानसिंह मौजूद है तथा खरगे एवं नादरी की मृत्यु हो चुकी है। खरगे के वारिस वादी क्र० 3, 4 एवं 5 है तथा नादरी के वारिस प्रतिवादी क्र० 6 लगायत 10 है। इस प्रकार पिरने के स्थान पर वादग्रस्त भूमि के 1/6-1/6 भाग के स्वत्व एवं आधिपत्यधारी वादीगण हुए थे। उक्त वादग्रस्त भूमि वादीगण के पिता एवं बाबा मृतक पिरने के स्वअर्जित सम्पत्ति है जिसके पिरने हमेशा से हमेशा से ही स्वत्व एवं आधिपत्यधारी थी। पिरने की मृत्यु वर्ष 1993 में हो चुकी है एवं पिरने के मरने के बाद वादीगण अपने हिस्सा अनुसार उक्त भूमि पर काबिज होकर खेती कर रहे हैं। मृतक पिरने ने अपने जीवनकाल में कोई बसीयत एवं दान द्वारा वादग्रस्त भूमि का अंतरण नहीं किया था। पिरने की मृत्यु की पश्चात् वादीगण वादग्रस्त भूमि के 1/6-1/6 भाग के स्वत्व एवं आधिपत्यधारी है। वादग्रस्त भूमि वादीगण के एकांकी एवं स्वत्व आधिपत्य की है। उक्त वादग्रस्त भूमि से प्रतिवादीगण का कोई सम्बंध नहीं है। वर्तमान में वादग्रस्त भूमि पर वादीगण की खेती हो रही है। वादी क्र० 1 शासकीय सेवक होकर बाहर रहता है। अन्य वादीगण सीधे साधे व्यक्ति है एवं किसी भी शासकीय रिकॉर्ड की जानकारी नहीं रखते हैं। प्रतिवादी क्र० 1 लगायत 3 चालाक व्यक्ति हैं। बंदोबस्त के दौरान प्रतिवादीगण ने बंदोबस्त अधिकारी एवं पटवारी से सांठ गांठ करके सक्षम अधिकारी के आदेश के बिना वादीगण का नाम निरस्त कराकर सर्वे क्र० 82, 83, 85, 98, 209, 210, 211, 123 एवं 186 पर प्रतिवादी क्र० 1 लगायत 3 का नाम एवं सर्वे क्र० 815 पर प्रतिवादी क्र० 4 का नाम अंकित करा लिया है। जिसका उन्हें कोई अधिकार नहीं था। प्रतिवादीगण ने गोपनीय तौर पर राजस्व अधिकारियों से सांठ गांठ कर वादग्रस्त भूमि पर अपने नाम का इन्द्राज कराया है एवं उक्त इन्द्राज से प्रतिवादीगण को कोई अधिकार प्राप्त नहीं होते हैं। दिनांक 25.10.2012 को प्रतिवादी क्र० 1 लगायत 4 वादग्रस्त भूमि के विक्रय की बातचीत कर रहे थे तब वादीगण ने राजस्व रिकॉर्ड निकलवाया था तब वादीगण को यह जानकारी हुई थी कि प्रतिवादीगण ने वादग्रस्त भूमि पर अपने नाम का अवैधानिक इन्द्राज करा लिया है। वादग्रस्त भूमि वादीगण के स्वत्व एवं आधिपत्य की भूमि है। प्रतिवादीगण का वादग्रस्त भूमि से कोई संबंध नहीं है। अतः

3 व्यवहार वाद कमांक:-27ए/2015

वाद प्रस्तुत कर वादीगण का निवेदन है कि वादीगण को वादग्रस्त भूमि के 1/6-1/6 भाग का स्वत्व एवं आधिपत्यधारी घोषित किया जावे तथा प्रतिवादीगण के विरुद्ध यह स्थाई निषेधाज्ञा जारी की जावे कि वह वादग्रस्त भूमि पर वादीगण के आधिपत्य में बाधा उत्पन्न न करें।

3. प्रतिवादी क्र० 1 लगायत 3 द्वारा वाद पत्र का खण्डन करते हुए उत्तर वाद पत्र प्रस्तुत कर व्यक्त किया गया है कि वादीगण वादग्रस्त भूमि के स्वत्व एवं आधिपत्यधारी नहीं हैं। वादग्रस्त भूमि पर वादीगण को हिस्सा 1/6-1/6 नहीं है। वादग्रस्त भूमि के 1/2 भाग पर प्रतिवादी क्र० 3 एवं 1/2 भाग के प्रतिवादी क्र० 1 व 2 स्वामी होकर काबिज हैं। प्रतिवादीगण द्वारा बंदोबस्त कर्मचारी अधिकारियों से कभी कोई सांठ गांठ नहीं की गई है। वादग्रस्त भूमि पर प्रतिवादीगण पूर्वजों के समय से काबिज हैं। वादग्रस्त भूमि प्रतिवादीगण को अपने पूर्वजों से विरासत में प्राप्त हुई है एवं बंदोबस्त के दौरान विधि अनुसार कार्यवाही हुई थी। वादीगण को वादग्रस्त भूमि पर प्रतिवादीगण के इन्द्राज की जानकारी यथा समय से ही थी। प्रतिवादीगण का इन्द्राज वादग्रस्त भूमि पर विधिक रूप से सक्षम प्राधिकारी के आदेश से ही दर्ज हुआ है। वादग्रस्त भूमि पर वादीगण का कोई स्वत्व नहीं है। प्रतिवादीगण वादग्रस्त भूमि पर अपने पूर्वजों के समय से ही खेती करते चले आ रहे हैं। वादीगण द्वारा असत्य आधारों पर वाद प्रस्तुत किया गया है जो निरस्ती योग्य हैं।

4. प्रतिवादी क्र० 4 द्वारा वाद पत्र का खण्डन करते हुए उत्तर वाद पत्र प्रस्तुत कर व्यक्त किया गया है कि वादीगण वादग्रस्त भूमि के स्वत्व एवं आधिपत्यधारी नहीं हैं। सर्वे क्र० 815 का भूमि स्वामी प्रतिवादी क्र० 4 है। सर्वे क्र० 815 में वादीगण का कोई भाग नहीं है। प्रतिवादी क्र० 4 भूमि सर्वे क्र० 815 का रिकॉर्डेड स्वत्व एवं आधिपत्यधारी है। प्रतिवादी द्वारा बंदोबस्त के दौरान किसी भी प्रकार से गलत इन्द्राज नहीं कराया गया है। यदि प्रतिवादी क्र० 4 द्वारा वादग्रस्त भूमि पर गलत इन्द्राज कराया गया है जो वादीगण को इन्द्राज दुरुस्ती के लिए राजस्व न्यायालय में कार्यवाही करनी चाहिए थी। वादी द्वारा गलत रूप से वाद पत्र प्रस्तुत किया गया है। वादग्रस्त भूमि के संबंध में वादीगण को बीस वर्ष पूर्व से ही जानकारी है। वादीगण द्वारा अवधि ब्राह्म्य वाद प्रस्तुत किया गया है। वादीगण द्वारा भू राजस्व संहिता की धारा 115 एवं 116 के तहत राजस्व न्यायालय में कार्यवाही नहीं की गई है इन्द्राज दुरुस्ती के संबंध में राजस्व न्यायालय को एकाकी क्षेत्राधिकार है। वादीगण द्वारा असत्य आधारों पर वाद प्रस्तुत किया गया है जो निरस्ती योग्य है।

5. यह उल्लेखनीय है कि प्रकरण में प्रतिवादी क्र० 5 के तामील उपरांत उपस्थित न होने से प्रतिवादी क्र० 5 के विरुद्ध प्रकरण में एक पक्षीय कार्यवाही की गई है।

6. उपरोक्त अभिवचनों के अवलोकन से मेरे पूर्वाधिकारी द्वारा निम्नलिखित वाद प्रश्न विरचित किये गये हैं जिनके सम्मुख मेरे निष्कर्ष अंकित है।

वाद प्रश्न

1. क्या वादीगण वादग्रस्त भूमि मौजा इकाहरा परगना गोहद के विवादित सर्वे नं० 82 रकबा 0.280 जिसका बंदोबस्त के पूर्व का नम्बर 66/2, 83 रकबा 0.840 जिसका बंदोबस्त से पूर्व सर्वे नम्बर 61/810, 85 रकबा 0.350 बंदोबस्त के पूर्व

निष्कर्ष

4 व्यवहार वाद कमांक:-27ए/2015

सर्वे नम्बर 61/810, 98 रकबा 0.550 बंदोबस्त के पूर्व सर्वे नं0 496/4, 209 रकबा 0.140, बंदोबस्त से पूर्व के सर्वे नं0 496/4, 211 रकबा 0.060, बंदोबस्त के पूर्व के सर्वे नं0 496/4, 815 रकबा 1.30, बंदोबस्त के पूर्व नं0 270 बांके मौजा इकाहरा परगना गोहद तथा सर्वे नं0 137 रकबा 0.23, बंदोबस्त के पूर्व के नं0 38, रकबा 0.15, बंदोबस्त के पूर्व के नं0 38, 139 रकबा 0.21, बंदोबस्त के पूर्व के नं0 38, 140 रकबा 0.22, बंदोबस्त के पूर्व नं0 38, 638 रकबा 0.10, बंदोबस्त के पूर्व के नं0 472, 639 रकबा 0.81, बंदोबस्त के पूर्व के नं0 458 बांके मौजा टुडीला परगना गोहद के 1/6- 1/6- 1/6 के भूमि स्वामी है ?

2. क्या प्रतिवादीगण ने वादीगण को वादग्रस्त भूमि से आविधानिक रूप से वेकब्जा करने अथवा आविधानिक रूप से विक्रय करने का प्रयास किया है ?
3. क्या वादीगण ने दावे का उचित मूल्यांकन कर उस पर विहित न्यायालय शुल्क अदा किया है ?
4. क्या विवादित भूमि पर वादीगण का आधिपत्य न होने से धारा 34 विनिर्दिष्ट अनुतोष अधिनियम के तहत कब्जा वापिसी की सहायता न चाहे जाने के कारण दावा अप्रचलनशील है ?
5. क्या वादीगण का दावा अवधि ब्राह्य है ?
6. सहायता एवं व्यय ?

निष्कर्ष एवं निष्कर्ष के कारण

वाद प्रश्न कमांक-1

7. उक्त वाद प्रश्न को प्रमाणित करने का भार वादीगण पर है। उक्त वाद प्रश्न के संबंध में वादी केवल सिंह वा0सा0 1 ने अपने वाद पत्र एवं शपथ पत्र में यह अभिवचनित किया है कि मौजा इकाहरा एवं मौजा टुडीला में स्थित वादग्रस्त भूमि में वादी क0 1 का हिस्सा 1/4 वादी क0 2 का हिस्सा 1/4 वादी क0 3 लगायत 5 का हिस्सा 1/4 एवं वादी क0 6 लगायत 10 का हिस्सा 1/4 है तथा वादीगण उक्त हिस्से अनुसार वादग्रस्त भूमि के स्वामी होकर आधिपत्य धारी हैं। उपरोक्त भूमि वादी क0 1 एवं 2 के पिता मृतक पिरने एवं वादी क0 3 लगायत 5 के पिता मृतक खरगे पुत्र पिरने वादी क0 6 लगायत 10 के पिता नादरी पुत्र पिरने से प्राप्त हुई है। वादीगण अपने अपने हिस्से अनुसार खेती करते चले आ रहे हैं। पिरने की मृत्यु वर्ष 1993 में हो चुकी है। उनके मरने के बाद वादग्रस्त भूमि वादी क0 1 एवं 2 को तथा वादी क0 3 लगायत 5 के पिता खरगे एवं 6 लगायत 10 के पिता नादरी को वारिसान की हैसियत से प्राप्त हुई थी जिसमें से खरगे व नादरी की मृत्यु हो गई है एवं खरगे एवं नादरी की पत्नि एवं पुत्रगण उनके वारिस होकर उत्तराधिकारी हैं। मृतक पिरने ने अपने जीवनकाल में वादग्रस्त भूमि का कोई भी अंतरण एवं बसीयत नहीं किया है पिरने की मृत्यु निर्वसीयती हुई है। वादी केवल सिंह शासकीय सेवा में होने के कारण बाहर रहता था। पिरने की मृत्यु के बाद प्रतिवादीगण ने शेष वादीगण की जानकारी के बिना उक्त भूमि का नामांतरण अपने नाम करा लिया था जबकि प्रतिवादीगण का उक्त भूमि

5 व्यवहार वाद क्रमांक:-27ए/2015

से कोई संबंध नहीं हैं। उक्त अवैध नामांतरण की जानकारी वादीगण को तब हुई थी जब प्रतिवादीगण ने गौराबाई के स्थान पर बांटोबाई पत्नि मुन्नालाल को खड़ा करके मुनेन्द्र भदौरिया एवं रेखा भदौरिया के नाम से दिनांक 09.12.11 को विक्रय पत्र निष्पादित कर दिया था। जब उक्त फर्जी विक्रय पत्र की जानकारी वादीगण को हुई थी तब वादीगण ने राजस्व अभिलेख के खसरा खतौनी की नकले प्राप्त की थी तब जानकारी में आया था कि प्रतिवादीगण ने वादीगण की भूमि का अपने नाम गलत नामांतरण करा लिया है। वादी केवल सिंह वा0सा0 1 द्वारा अपने अभिवचनों के समर्थन में ग्राम इकाहरा के सर्वे नम्बरों की रिनम्बरिंग सूची प्र0पी0 3, ग्राम इकाहरा के वर्ष 2012-13 के खसरे की सत्यापित प्रतिलिपि प्र0पी0 4 प्र0पी0 5, प्र0पी0 6, प्र0पी0 7 एवं सम्वत् 2041 लगायत 2045 के खसरे की सत्यापित प्रतिलिपि प्र0पी0 8 तथा ग्राम टुडीला की रिनम्बरिंग सूची प्र0पी0 9 एवं ग्राम टुडीला के वर्ष 2012-13 के खसरे की सत्यापित प्रतिलिपि प्र0पी0 10 तथा सम्वत् 2039 लगायत 2043 के खसरे की प्रमाणित प्रतिलिपि प्र0पी0 11 प्रकरण में प्रस्तुत की गई है।

8. प्रतिपरीक्षण के पद क्र0 7 में उक्त साक्षी ने व्यक्त किया है कि उसके बाबा परसादी के तीन लड़के पिरने, भवानी एवं भोगीराम थे। उसके बाबा परसादी के नाम से मौजा इकाहरा एवं मौजा टुडीला में कोई जमीन नहीं थी। जब उसके बाबा खत्म हुए थे तो उसके बाबा एवं भोगीराम एवं भवानी अलग-अलग रहते थे। पद क्र0 8 में उक्त साक्षी का कहना है कि मौजा इकाहरा एवं मौजा टुडीला की जो जमीन थी वह उसके पिता को जमींदारों द्वारा पट्टे दिये गये थे उसने उक्त पट्टों की प्रमाणित प्रतिलिपि प्रकरण में पेश नहीं की है और न ही उक्त पट्टे देखे हैं। उक्त साक्षी ने यह भी स्वीकार किया है कि विवादित जमीन पर उसके पिता पिरने एवं भोगीराम तथा भवानी उसके पिता के जमाने से ही खेती करते चले आ रहे हैं। उसके पिता एवं भवानी तथा भोगीराम का बंटवारा नहीं हुआ था। जो जमीन उसके पिता के नाम पर थी उस पर उसके पिता खेती करते थे और जो जमीन उसके पिता एवं उसके चाचा भवानी एवं भोगीराम ने मिलकर खरीदी थी उस पर उसके पिता शामिल होती खेती करते थे। विवादित जमीन के अतिरिक्त उसके पिता के पास ग्राम इकाहरा एवं टुडीला में अन्य भूमि हैं। उक्त भूमि पर सभी लोग वह रामकरन एवं मुन्नालाल खेती कर रहे हैं। उसे जानकारी नहीं है कि विवादित मौजे में बंदोबस्त किस सन् में हुआ था। बंदोबस्त की जानकारी उसे वर्ष 2012 में हुई थी। उक्त साक्षी ने यह भी स्वीकार किया है कि उसके पिता की मृत्यु होने के बाद वर्ष 2012 तक उसके तथा प्रतिवादीगण के मध्य कोई झगड़ा नहीं हुआ था और न ही कोई मुकदमा चला था। उक्त साक्षी ने प्रतिवादीगण अधिवक्ता के इस सुझाव से इंकार किया है कि विवादित जमीन में उसके पिता का हिस्सा 1/3 था। उक्त साक्षी ने प्रतिवादीगण अधिवक्ता के इस सुझाव से भी इंकार किया है कि खेती से मिलने वाले पैसे से तीनों भाई मिलकर खेती खरीदते थे एवं उसके पिता बड़े थे इस कारण उनका नाम खेती पर लिखा जाता था। पद क्र0 10 में उक्त साक्षी ने व्यक्त किया है कि उसके पिता की मृत्यु वर्ष 1993 में हुई थी। पद क्र0 11 में उक्त साक्षी का कहना है कि उसे जानकारी नहीं है कि उसके पिता ने दिनांक 13.02.89 को प्र0डी0 1 बसीयत की थी। उसे यह भी जानकारी नहीं है कि उक्त बसीयत पर जगन्नाथ ने हस्ताक्षर किये थे। पद क्र0 12 में उक्त साक्षी ने यह स्वीकार किया है कि उसके पिता की मृत्यु के समय खरगे एवं नादरी जीवित थे। पद क्र0 14 में उक्त साक्षी का कहना है कि सर्वे क्र0 815 का रकबा 6 बीघा 8 विस्सा है, वह जमीन उसके पिता के नाम से थी और वही से उसे प्राप्त हुई है। उसे जानकारी नहीं है कि उसके पिता के स्थान पर उसका फौती नामांतरण कब हुआ था। वह चार भाई एवं तीन बहनें हैं। उक्त साक्षी ने यह भी स्वीकार किया है कि उसे यह जानकारी नहीं है कि पिता के मरने के बाद वादग्रस्त भूमि पर चारों

6 व्यवहार वाद क्रमांक:-27ए/2015

भाईयों एवं तीनों बहनों का नामांतरण हुआ था या नहीं। पद क्र० 15 में उक्त साक्षी ने यह स्वीकार किया है कि बंदोबस्त के दौरान मुलायम ने सर्वे क्र० 815 का इन्द्राज नहीं कराया था एवं गलती कम्प्यूटर से हुई थी।

9. वादी साक्षी नाथूराम वा०सा० 2 एवं फोदल वा०सा० 3 ने भी वादी के अभिवचनों के समर्थन में साक्ष्य दी है।

10. प्रतिवादी रामचरन प्र०सा० 1 ने वादी के अभिवचनों का खण्डन करते हुए शपथ प्रस्तुत कर व्यक्त किया है कि मौजा इकाहरा एवं टुडीला में स्थित विवादित भूमि मृतक पिरने ने अपने जीवनकाल में अपने छोटे भाई स्व० भोगीराम के पुत्र रामचरन एवं भवानी के पुत्र मुन्नालाल तथा अमरसिंह को बसीयत की थी। बसीयत दिनांक 13.02.89 को गोहद उपपंजीयक कार्यालय में हुई थी। पिरने की मृत्यु के बाद वसीयत के आधार पर राजस्व अधिकारियों के आदेश से प्रतिवादी क्र० 1, 2 एवं 3 के नाम का वादग्रस्त भूमि पर नामांतरण हुआ था। नामांतरण के पूर्व से ही प्रतिवादी क्र० 1 लगायत 3 के पिता एवं ताउ पिरने के साथ शामिलाली खेती करते थे। वादग्रस्त भूमि से वादीगण का कोई संबंध नहीं है। पिरने के दो भाई भोगीराम एवं भवानी थे। उक्त तीनों भाईयों ने मेहनत करके शामिलाली खेती करके वादग्रस्त भूमि खरीदी थी तथा प्रतिवादी क्र० 1 लगायत 2 के पिता भवानी एवं प्रतिवादी क्र० 3 के पिता भोगीराम ने उक्त शामिलाली की खेती की कमाई से खरीदी गई वादग्रस्त भूमि पर वादी के पिता का नाम लिखा दिया था। वादीगण के पिता व बाबा पिरने इस बात को अच्छी तरह जानते थे कि उक्त विवादित भूमि में तीनों भाईयों का बराबर हिस्सा है इसी कारण पिरने ने मृत्यु के पूर्व वसीयत के द्वारा मौजा इकाहरा का बंदोबस्त से पूर्व सर्वे क्र० 270 नया सर्वे क्र० 815 रकबा 1.327 हेक्टेयर अपने पास रखा था तथा शेष सर्वे क्र० 137 रकबा 0.23, 138 रकबा 0.15, 139 रकबा 0.21, 140 रकबा 0.22, 638 रकबा 0.20 तथा 639 रकबा 0.81 हेक्टेयर प्रतिवादीगण के नाम कर दिया था। जिस पर प्रतिवादी क्र० 1 लगायत 2 व 3 का विधि अनुसार नामांतरण हुआ था एवं उक्त सम्पूर्ण रकबे पर प्रतिवादीगण काबिज होकर खेती कर रहे हैं। वादग्रस्त भूमि से वादीगण को कोई संबंध नहीं है। पिरने ने वादग्रस्त भूमि के सर्वे क्र० 270 रकबा 1.327 नवीन सर्वे क्र० 815 रकबा 1.30 का सम्पूर्ण खाता अपने पास रख लिया था तथा शेष वादग्रस्त भूमि में 1/2 भाग प्रतिवादी क्र० 1 एवं 2 का तथा 1/2 भाग प्रतिवादी क्र० 3 का है। उक्त भूमि से वादीगण को कोई संबंध नहीं है। वादग्रस्त भूमि पर प्रतिवादी क्र० 1, 2 एवं 3 का पूर्वजों के समय से कब्जा चला आ रहा है। प्रतिवादी रामचरन प्र०सा० 1 द्वारा अपने अभिवचनों के समर्थन में सम्वत् 2050 लगायत 2054 के खसरे की सत्यापित प्रतिलिपि प्र०पी० 2, सम्वत् 2053 लगायत 2057 का खसरा प्र०डी० 3 मौजा टुडीला की भू अधिकार ऋण पुस्तिका प्र०डी० 4 एवं मौजा इकाहरा की भू अधिकार ऋण पुस्तिका प्र०डी० 5 प्रकरण में प्रस्तुत की गई है।

11. प्रतिपरीक्षण के पद क्र० 7 में उक्त साक्षी ने यह स्वीकार किया है कि पिरने ने उसके, मुन्नासिंह व अमरसिंह के नाम विक्रय पत्र निष्पादित नहीं किया है एवं व्यक्त किया है कि वसीयत की है। उक्त साक्षी ने यह भी स्वीकार किया है कि प्र०डी० 1 की वसीयत के दोनो साक्षी मातादीन एवं जगन्नाथ जीवित है तथा दोनों साक्षियों ने गवाही देने से मना कर दिया था। पद क्र० 9 में उक्त साक्षी ने यह व्यक्त किया है कि उसे नहीं पता कि वसीयत में कौन-कौन से सर्वे नं० वसीयत किये गये हैं एवं यह भी स्वीकार किया है कि उसने वसीयत के नौ बीघे भूमि अधिक लिखा ली है। पद क्र० 10 में उक्त साक्षी

7 व्यवहार वाद क्रमांक:-27ए/2015

ने यह भी स्वीकार किया है कि विवादित जमीन केवल सिंह बगैरह की है एवं यह भी स्वीकार किया है कि उसने विवादित भूमि पिरने के जीवनकाल में अपने नाम करा ली थी। पिरने ने अपने जीवनकाल में विवादित भूमि उसके नाम कर दी थी।

12. प्रतिवादी साक्षी जनवेद प्र०सा० 2 एवं मुन्नालाल प्र०सा० 3 ने भी प्रतिवादी रामचरन प्र०सा० 1 के अभिवचनों के समर्थन में साक्ष्य दी है।

13. तर्क के दौरान वादीगण अधिवक्ता द्वारा यह व्यक्त किया गया है कि वादग्रस्त भूमि उनके पूर्वज मृतक पिरने के स्वत्व एवं आधिपत्य की भूमि थी एवं पिरने की मृत्यु हो चुकी है तथा वह मृतक पिरने के वारिस होकर वादग्रस्त भूमि के स्वत्व व आधिपत्यधारी है जबकि प्रतिवादीगण अधिवक्ता द्वारा तर्क के दौरान यह व्यक्त किया गया है कि वादग्रस्त भूमि संयुक्त हिन्दू परिवार की संयुक्त आय से क्रय की गई थी एवं कर्ता के रूप में वादी क्र० 1 एवं 2 के पिता पिरने का नाम राजस्व अभिलेखों में अंकित था। वादग्रस्त भूमि वादी क्र० 1 एवं 2 के पिता पिरने ने प्रतिवादीगण के नाम वसीयत कर दी थी एवं उक्त आधार पर प्रतिवादीगण वादग्रस्त भूमि के स्वत्व एवं आधिपत्यधारी हैं।

14. प्रस्तुत प्रकरण में वादी केवल सिंह वा०सा० 1 द्वारा यह अभिवचनित किया गया है कि वादग्रस्त भूमि वादी क्र० 1 एवं 2 के पिता तथा वादी क्र० 3, 4, 6, 7, 8 एवं 9 के बाबा तथा वादी क्र० 5 एवं 10 के ससुर मृतक पिरने के स्वत्व व आधिपत्य की भूमि थी एवं वादीगण के पूर्वज पिरने की मृत्यु वर्ष 1993 में हो चुकी है तथा पिरने की मृत्यु उपरांत वादीगण मृतक पिरने के वारिस होकर वादग्रस्त भूमि के स्वत्व व आधिपत्यधारी हैं। प्रतिवादीगण का वादग्रस्त भूमि से कोई संबंध नहीं है जबकि प्रतिवादीगण द्वारा वादीगण के अभिवचनों का खण्डन किया गया है तथा यह व्यक्त किया गया है कि वादग्रस्त भूमि मृतक पिरने द्वारा प्रतिवादीगण के नाम वसीयत कर दी गई थी एवं उक्त आधार पर प्रतिवादीगण वादग्रस्त भूमि के स्वत्व व आधिपत्यधारी हैं। प्रतिवादीगण द्वारा उक्त संबंध में प्र०डी० 1 की वसीयत भी अभिलेख पर प्रस्तुत की गई है।

15. इस प्रकार प्रतिवादी क्र० 1 लगायत 3 द्वारा यह अभिवचनित किया गया है कि वादी क्र० 1 एवं 2 के पिता मृतक पिरने के दो भाई भवानी एवं भोगीराम भी थे तथा प्रतिवादी क्र० 1 एवं 2 भवानी के पुत्र हैं एवं प्रतिवादी क्र० 3 भोगीराम का पुत्र है। भवानी एवं भोगीराम की भी मृत्यु हो चुकी है। प्रतिवादीगण द्वारा यह भी अभिवचनित किया गया है कि वादग्रस्त भूमि मृतक पिरने भवानी एवं भोगीराम द्वारा संयुक्त हिन्दू परिवार की आय से क्रय की गई थी जिसमें पिरने का हिस्सा $1/3$ था एवं इसी कारण मृतक पिरने ने अपने जीवनकाल में वादग्रस्त भूमि प्र०डी० 1 की वसीयत द्वारा प्रतिवादी क्र० 1 लगायत 3 के हित में वसीयत कर दी थी। इस प्रकार प्रतिवादी क्र० 1 लगायत 3 ने प्र०डी० 1 की वसीयत के आधार पर वादग्रस्त भूमि पर अपना स्वत्व होना बताया है परन्तु प्रतिवादीगण द्वारा प्र०डी० 1 की वसीयत को प्रमाणित नहीं किया गया है। इसके अतिरिक्त प्रतिवादी रामचरन प्र०सा० 1 ने अपने प्रतिपरीक्षण के पद क्र० 7 में यह भी स्वीकार किया है कि प्र०डी० 1 की वसीयत की दोनों साक्षी मातादीन एवं जगन्नाथ जीवित हैं एवं दोनों साक्षियों ने इस कारण गवाही देने से मना कर दिया था क्योंकि वसीयतनामा फर्जी है। प्रतिपरीक्षण के पद क्र० 9 में उक्त साक्षी ने यह भी स्वीकार किया है कि उसने वसीयत में नौ बीघे जमीन अधिक लिखा ली है इस प्रकार प्रतिवादी रामचरन प्र०सा० 1 ने स्वयं

8 व्यवहार वाद कमांक:-27ए/2015

अपने कथन में प्र०डी० 1 की वसीयत को फर्जी होना स्वीकार किया है। प्रतिवादी क्र० 1 लगायत 3 द्वारा प्र०डी० 1 की वसीयत के साक्षियों को भी परीक्षित नहीं कराया गया है ऐसी स्थिति में प्र०डी० 1 की वसीयत प्रमाणित होना नहीं माना जा सकता है एवं प्र०डी० 1 की वसीयत के आधार पर प्रतिवादीगण को कोई अधिकार प्राप्त नहीं होता है।

16. वादीगण द्वारा यह अभिवचनित किया गया है कि वादग्रस्त भूमि उनके पूर्वज मृतक पिरने के स्वत्व की भूमि थी एवं वह मृतक पिरने के वारिस होकर वादग्रस्त भूमि के स्वत्व एवं आधिपत्यधारी है। वादी केवल सिंह वा०सा० 1 द्वारा उक्त संबंध में वादग्रस्त भूमि के सम्वत् 2041 लगायत 2045 के खसरे की सत्यापित प्रतिलिपि प्र०पी० 8 एवं मौजा टुडीला में स्थित वादग्रस्त भूमि के सम्वत् 2039 लगायत 2043 के खसरे की सत्यापित प्रतिलिपि प्र०पी० 11 भी प्रकरण में प्रस्तुत की गई है। प्र०पी० 8 के खसरे के अवलोकन से यह दर्शित है कि सम्वत् 2041 लगायत 2045 में भूमि सर्वे क्र० 61/1, 66/2 एवं 61/2 सर्वे क्र० 270 एवं सर्वे क्र० 496/4 पर पिरने का नाम भूमि स्वामी के रूप में दर्ज था तथा प्र०पी० 11 के खसरे से यह भी दर्शित है कि सर्वे क्र० 38/10, सर्वे क्र० 458 एवं 472/1 पर मृतक पिरने का नाम भूमि स्वामी के रूप में दर्ज था। वादीगण की ओर से उक्त संबंध में मौजा इकाहरा की रिनम्बरिंग सूची प्र०पी० 3 तथा मौजा टुडीला की रिनम्बरिंग सूची प्र०पी० 9 भी प्रकरण में प्रस्तुत की गई है। प्र०पी० 3 की रिनम्बरिंग सूची से यह स्पष्ट है कि वादग्रस्त भूमि सर्वे क्र० 82 का बंदोबस्त से पूर्व सर्वे क्र० 66/2, सर्वे क्र० 83 एवं 85 का बंदोबस्त से पूर्व सर्वे क्र० 61/810 सर्वे क्र० 98, 209 एवं 211 का बंदोबस्त से पूर्व सर्वे क्र० 496/4 तथा सर्वे क्र० 815 का बंदोबस्त से पूर्व सर्वे क्र० 270 था एवं मौजा टुडीला की रिनम्बरिंग सूची प्र०पी० 9 से यह भी स्पष्ट है कि सर्वे क्र० 137, सर्वे क्र० 138, सर्वे क्र० 139, सर्वे क्र० 140 का बंदोबस्त से पूर्व सर्वे क्र० 38 तथा सर्वे क्र० 638 का बंदोबस्त से पूर्व सर्वे क्र० 472 एवं सर्वे क्र० 639 का बंदोबस्त से पूर्व सर्वे क्र० 458 था। प्रतिवादीगण की ओर से प्र०पी० 3 एवं प्र०पी० 9 की रिनम्बरिंग सूची का कोई खण्डन नहीं किया गया है।

17. वादीगण द्वारा जो प्र०पी० 8 एवं प्र०पी० 11 का खसरा प्रस्तुत किया गया है उससे यह दर्शित है कि वादग्रस्त भूमि बंदोबस्त से पूर्व वादीगण के पूर्वज मृतक पिरने के नाम भूमि स्वामी के रूप में दर्ज थी। इसके अतिरिक्त प्रतिवादीगण ने भी अपने अभिवचनों में वादग्रस्त भूमि मृतक पिरने के स्वत्व की होना स्वीकार किया है। प्रतिवादी रामचरन प्र०सा० 1 ने अपने प्रतिपरीक्षण के पद क्र० 10 में यह भी स्वीकार किया है कि विवादित जमीन केवल सिंह बगैरह की है इस प्रकार स्वयं प्रतिवादीगण ने भी वादग्रस्त जमीन वादीगण की होना स्वीकार किया है। यद्यपि प्रतिवादीगण द्वारा यह अभिवचन किया है कि वादग्रस्त भूमि के भूमि स्वामी मृतक पिरने के अतिरिक्त उनके पिता भवानी एवं भोगीराम भी थे परन्तु उक्त संबंध में कोई दस्तावेज प्रतिवादीगण द्वारा अभिलेख पर प्रस्तुत नहीं किया गया है। प्रतिवादीगण द्वारा यह भी व्यक्त किया गया है कि वादग्रस्त भूमि मृतक पिरने से उन्हें वसीयत प्र०डी० 1 द्वारा प्राप्त हुई थी परन्तु वसीयत प्रमाणित नहीं है एवं प्रतिवादी रामचरन प्र०सा० 1 द्वारा स्वयं की प्र०डी० 1 की वसीयत को खण्डित किया गया है एवं वसीयत का फर्जी होना स्वीकार किया गया है। इसके अतिरिक्त प्रतिवादीगण द्वारा ही जो सम्वत् 2050 लगायत 2054 का खसरा प्र०डी० 2 प्रकरण में प्रस्तुत किया गया है उसमें सर्वे क्र० 82 रकवा 0.280, सर्वे क्र० 83 रकबा 0.840 सर्वे क्र० 85 रकवा 0.350, सर्वे क्र० 98 रकवा 0.550, सर्वे क्र० 209 रकवा 0.140, सर्वे क्र० 211 रकवा 0.06 पर मृतक पिरने का नाम खसरे के कॉलम नम्बर 3 में भूमि स्वामी के रूप में अंकित है एवं प्रतिवादीगण द्वारा सम्वत् 2053 लगायत 2057 का खसरा

9 व्यवहार वाद कमांक:-27ए/2015

प्र०डी० 3 प्रकरण में प्रस्तुत किया गया है उसमें सर्वे क्र० 137 रकबा 0.23, सर्वे क्र० 138 रकबा 0.15, सर्वे क्र० 139 रकबा 0.21, सर्वे क्र० 140 रकबा 0.22, सर्वे क्र० 638 रकबा 0.10 एवं सर्वे क्र० 639 रकबा 0.81 पर मृतक पिरने का नाम खसरे के कॉलम नम्बर 3 में भूमि स्वामी के रूप में अंकित है। इस प्रकार प्रतिवादीगण द्वारा जो दस्तावेज प्रस्तुत किये गये हैं उनसे ही यह स्पष्ट है कि वादग्रस्त भूमि मृतक पिरने के स्वामित्व की भूमि थी। जहां तक उक्त भूमि पर पिरने की मृत्यु उपरांत प्रतिवादीगण का नामांतरण होने का प्रश्न है तो वहां यह उल्लेखनीय है कि मात्र नामांतरण होने से किसी भी व्यक्ति को वादग्रस्त भूमि पर स्वत्व प्राप्त नहीं हो जाता है। प्रतिवादीगण द्वारा अपने स्वत्व का जो स्त्रोत बताया गया है वह भी सत्य नहीं है। प्रतिवादीगण वसीयत प्रमाणित करने में असफल रहे हैं, ऐसी स्थिति में वादग्रस्त भूमि पर प्रतिवादीगण का अधिकार तो साबित नहीं होता है परन्तु वादीगण द्वारा जो प्र०पी० 8 एवं प्र०पी० 11 का खसरा तथा प्रतिवादीगण द्वारा जो प्र०डी० 2 एवं प्र०डी० 3 के खसरे प्रकरण में प्रस्तुत किये गये हैं, उनसे यह प्रमाणित है कि वादग्रस्त भूमि के पूर्व भूमि स्वामी मृतक पिरने थे।

18. यह उल्लेखनीय है कि वादी क्र० 1 एवं 2 मृतक पिरने के पुत्र हैं तथा वादी क्र० 3 लगायत 5 मृतक पिरने के मृत पुत्र खरगे के वारिस हैं एवं वादी क्र० 6 लगायत 10 मृतक पिरने के मृत पुत्र नादरी के वारिस हैं एवं वादी क्र० 11 मृतक पिरने की पुत्री है तथा वादी क्र० 12 मृतक पिरने की मृत पुत्री लाड़ोबाई का पुत्र है तथा उत्तराधिकार के सामान्य नियम के अनुसार पिरने की मृत्यु उपरांत पिरने की वारिसान की हैसियत से वादग्रस्त भूमि के उत्तराधिकारी हैं। जहां तक उक्त संबंध में आई मौखिक साक्ष्य का प्रश्न है तो वहां यह उल्लेखनीय है कि वादी केवल सिंह वा०सा० 1 ने अपने अभिवचन में वादग्रस्त भूमि उसके पिता मृतक पिरने के स्वत्व की होना बताया है तथा यह भी व्यक्त किया है कि उसके पिता वर्ष 1993 में खत्म हो गये थे एवं उक्त साक्षी ने अपने प्रतिपरीक्षण के दौरान प्रतिवादी अधिवक्ता के उक्त सुझाव से भी इंकार किया है कि वादग्रस्त भूमि शामिलती पैसे से खरीदी गई थी। वादी साक्षी नाथूराम वा०सा० 2 ने अपने प्रतिपरीक्षण के दौरान यह स्वीकार किया है कि पिरने द्वारा जो जमीन खरीदी गई थी उस पर पिरने एवं उसके भाई भवानी तथा भोगीराम की खेती हो रही थी। इस प्रकार यद्यपि नाथूराम वा०सा० 2 ने वादग्रस्त भूमि पर पिरने, भवानी तथा भोगीराम की खेती होना बताया है परन्तु उक्त साक्षी द्वारा यह भी स्वीकार किया गया है कि जमीन मृतक पिरने द्वारा क्रय की गई थी उक्त साक्षी का ऐसा कहना नहीं है कि उक्त वादग्रस्त जमीन संयुक्त हिन्दू परिवार की आय से क्रय की गई थी।

19. वादी साक्षी फोदल अ०सा० 3 ने भी वादग्रस्त भूमि पिरने के स्वत्व एवं आधिपत्य की होना बताया है। प्रतिपरीक्षण के दौरान उक्त साक्षी ने यह स्वीकार किया है कि 27 बीघे जमीन पर वादी क्र० 1 एवं 2 खेती कर रहे हैं। जहां तक उक्त संबंध में प्रतिवादीगण द्वारा प्रस्तुत की गई मौखिक साक्ष्य का प्रश्न है तो प्रतिवादी रामचरन प्र०सा० 1 ने स्वयं अपने प्रतिपरीक्षण के पद क्र० 7 में यह स्वीकार किया है कि भोगीराम एवं भवानी के मरने के बाद भोगीराम की जमीन उसे प्राप्त हो गई तथा भवानी की जमीन अमरसिंह तथा मुन्नालाल को प्राप्त हुई थी एवं यह भी स्वीकार किया है कि पिरने के मरने के बाद उसकी जमीन उनके वारिसान केवल सिंह, कल्याण, खरगे एवं नादरी को प्राप्त होनी चाहिए थी। उक्त साक्षी ने अपने प्रतिपरीक्षण के पद क्र० 10 में यह भी स्वीकार किया है कि विवादित जमीन केवल सिंह बगैरह की है। प्रतिवादी साक्षी मुन्नालाल प्र०सा० 3 ने अपने प्रतिपरीक्षण के पद क्र० 3 में यह स्वीकार किया है कि पिरने के मरने के बाद जमीन वादी केवल सिंह के नाम आई है। इस प्रकार प्रतिवादी रामचरन प्र०सा० 1 एवं मुन्नालाल प्र०सा० 3 ने भी वादग्रस्त भूमि वादीगण की होना स्वीकार किया है।

10 व्यवहार वाद क्रमांक:-27ए/2015

20. प्रकरण में वादीगण द्वारा जो प्र०पी० 8 एवं प्र०पी० 11 के खसरे प्रस्तुत किये गये हैं, उनसे यह दर्शित है कि भूमि सर्वे क्र० 61/1, 66/2, 61/2 एवं सर्वे क्र० 270 तथा 496/4 एवं सर्वे क्र० 38/10, 458 एवं 472/1 के पूर्व भूमि स्वामी वादीगण के पूर्वज मृतक पिरने थे तथा प्रतिवादीगण द्वारा जो खसरे प्र०डी० 2 एवं प्र०डी० 3 प्रकरण में प्रस्तुत किये गये हैं उनसे यह भी दर्शित है कि बंदोवस्त के पश्चात् बने नवीन सर्वे क्र० 82 रकबा 0.28, सर्वे क्र० 83 रकबा 0.840, सर्वे क्र० 85 रकबा 0.350, सर्वे क्र० 98 रकबा 0.55, सर्वे क्र० 209 रकबा 0.140, सर्वे क्र० 211 रकबा 0.060 एवं सर्वे क्र० 137 रकबा 0.23, सर्वे क्र० 138 रकबा 0.15, सर्वे क्र० 139 रकबा 0.21, सर्वे क्र० 140 रकबा 0.22, सर्वे क्र० 638 रकबा 0.10 एवं सर्वे क्र० 639 रकबा 0.81 पर मृतक पिरने का नाम भूमि स्वामी के रूप में दर्ज था। जहां तक सर्वे क्र० 815, रकबा 1.30 भूमि का प्रश्न है तो वहां यह उल्लेखनीय है कि रिनम्बरिंग सूची प्र०पी० 3 के अनुसार सर्वे क्र० 815 का बंदोवस्त से पूर्व सर्वे क्र० 270 था एवं वादीगण द्वारा जो प्र०पी० 8 का खसरा प्रकरण में प्रस्तुत किया गया है उसमें सर्वे क्र० 270 पर भूमि स्वामी के रूप में पिरने का नाम अंकित है। सर्वे क्र० 815, सर्वे क्र० 270 का नवीन सर्वे क्रमांक है। प्रतिवादी मुलायम खॉं द्वारा अपने जबाब दावे में यह अभिवचनित किया गया है कि वह सर्वे क्र० 815 का भूमि स्वामी है परन्तु प्रतिवादी मुलायम खॉं द्वारा यह स्पष्ट नहीं किया गया है कि उसे सर्वे क्र० 815 की भूमि किस प्रकार प्राप्त हुई। प्रतिवादी मुलायम खॉं द्वारा अपने स्वत्व का स्रोत नहीं बताया गया है इसके विपरीत प्रतिवादी रामचरन प्र०सा० 1 ने अपने शपथ पत्र के पद क्र० 2 में यह बताया है कि पिरने ने सर्वे क्र० 270 नवीर सर्वे क्र० 815 रकबा 0.327 हेक्टेयर भूमि अपने पास रखी थी। इस प्रकार प्रतिवादी रामचरन प्र०सा० 1 द्वारा भी सर्वे क्र० 270 नवीन सर्वे क्र० 815 पर मृतक पिरने के स्वत्व को स्वीकार किया गया है प्र०पी० 8 के खसरे में भी सर्वे क्र० 270 की भूमि मृतक पिरने के नाम भूमि स्वामी के रूप में दर्ज है, ऐसी स्थिति में उक्त दस्तावेजों से यह भी प्रमाणित है कि सर्वे क्र० 270, नवीन सर्वे क्र० 815 रकबा 1.30 भूमि के पूर्व भूमि स्वामी मृतक पिरने थे।

21. इस प्रकार उपरोक्त चरणों में की गई समग्र विवेचना से यह दर्शित है कि वादग्रस्त भूमि पूर्व में मृतक पिरने के स्वत्व की भूमि थी एवं पिरने की मृत्यु हो चुकी है तथा वादी क्र० 1 एवं 2 मृतक पिरने के पुत्र हैं तथा वादी क्र० 3 लगायत 5 मृतक पिरने के मृत पुत्र खरगे के वारिस हैं तथा वादी क्र० 6 लगायत 10 मृतक पिरने के मृत पुत्र नादरी के वारिस हैं एवं वादी क्र० 11 मृतक पिरने की पुत्री तथा वादी क्र० 12 मृतक पिरने की मृत पुत्री लाड़ोबाई का पुत्र है। यहां यह भी उल्लेखनीय है कि वादीगण द्वारा विचारण के दौरान वादी सुज्जानी तथा पानसिंह को वादी क्र० 11 एवं 12 के रूप में वाद में संयोजित किया गया है। वादी केवल सिंह वा०सा० 1 ने अपने प्रतिपरीक्षण के पद क्र० 14 में यह व्यक्त किया गया है कि वह चार भाई और तीन बहनें हैं तथा वादी साक्षी नाथूराम वा०सा० 2 एवं फोदल वा०सा० 3 ने भी मृतक पिरने की तीन लड़कियां होना बताया है तथा वादी ने अपने आवेदन आदेश 1 नियम 10 सी०पी०सी० में यह भी वर्णित किया है कि पिरने की तीसरी पुत्री भूरीबाई की निःसंतान मृत्यु हो चुकी है। वादीगण अधिवक्ता द्वारा तर्क के दौरान भी यह व्यक्त किया गया है कि मृतक पिरने की तीन पुत्रियां सुज्जानी, लाड़ोबाई एवं भूरीबाई थी जिसमें लाड़ोबाई एवं भूरीबाई की मृत्यु हो चुकी है तथा भूरीबाई की मृत्यु निःसंतान हुई थी एवं लाड़ोबाई का पुत्र पानसिंह है। प्रतिवादीगण द्वारा उक्त तथ्यों का कोई खण्डन नहीं किया गया है।

22. जहां तक वादग्रस्त भूमि पर वादीगण का आधिपत्य होने का प्रश्न है तो वहां यह उल्लेखनीय है कि यद्यपि वादीगण द्वारा वादग्रस्त भूमि पर अपना आधिपत्य होने संबंध कोई दस्तावेज

11 व्यवहार वाद कमांक:-27ए/2015

प्रकरण में प्रस्तुत नहीं किये गये हैं परन्तु यह भी उल्लेखनीय है कि वादीगण मृतक पिरने के वारिस है एवं वादीगण ने वादग्रस्त भूमि पर पिरने की मृत्यु उपरांत काबिज होकर कृषि कार्य करना बताया है। प्रतिवादी रामचरन प्र०सा० 1 ने भी वादग्रस्त भूमि केवल सिंह बगैरह की होना बताया है तथा मुन्नालाल प्र०सा० 3 ने भी वादग्रस्त भूमि पिरने की मृत्यु के बाद केवल सिंह के नाम होना बताया है, इस प्रकार प्रकरण में आई मौखिक साक्ष्य से वादग्रस्त भूमि पर वादीगण को आधिपत्य प्रमाणित है।

23. फलतः समग्र अवलोकन से यह प्रमाणित है कि वादग्रस्त भूमि पूर्व में मृतक पिरने के स्वत्व की भूमि थी एवं पिरने की मृत्यु हो चुकी है तथा वादी क्र० 1 एवं 2 मृतक पिरने के पुत्र हैं तथा वादी क्र० 3 लगायत 5 मृतक पिरने के मृत पुत्र खरगे के वारिस है तथा वादी क्र० 6 लगायत 10 मृतक पिरने के मृत पुत्र नादरी के वारिस है एवं वादी क्र० 11 मृतक पिरने की पुत्री तथा वादी क्र० 12 मृतक पिरने की मृत पुत्री लाड़ोबाई का पुत्र है एवं पिरने की मृत्यु उपरांत उत्तराधिकार के सामान्य नियम के अनुसार वादग्रस्त भूमि वादीगण को उत्तराधिकार में प्राप्त हुई है एवं यह भी प्रमाणित है कि पिरने की मृत्यु उपरांत वादी क्र० 1 वादग्रस्त भूमि के 1/6 भाग, वादी क्र० 2 वादग्रस्त भूमि के 1/6 भाग एवं वादी क्र० 3 लगायत 5 वादग्रस्त भूमि के 1/6 भाग, वादी क्र० 6 लगायत 10 वादग्रस्त भूमि के 1/6 भाग, वादी क्र० 11 वादग्रस्त भूमि के 1/6 भाग एवं वादी क्र० 12 वादग्रस्त भूमि के 1/6 भाग के स्वत्व एवं आधिपत्यधारी हैं। फलतः उक्त वाद प्रश्न वादीगण के पक्ष में प्रमाणित है।

वाद प्रश्न कमांक-2

24. उक्त वाद प्रश्न का निष्कर्ष वाद प्रश्न क्र० 1 के निष्कर्ष पर आधारित है। वाद प्रश्न क्र० 1 के निष्कर्ष के अनुसार वादग्रस्त भूमि पर वादीगण का स्वत्व एवं आधिपत्य प्रमाणित है। वादीगण द्वारा यह अभिवचनित किया गया है कि प्रतिवादीगण द्वारा राजस्व अभिलेखों में वादग्रस्त भूमि पर गलत रूप से अपने नाम का इन्द्राज कराया गया है एवं उक्त गलत इन्द्राज के आधार पर प्रतिवादीगण वादग्रस्त भूमि को बेचने के लिए प्रयासरत है एवं वादग्रस्त भूमि पर वादीगण के कब्जे में बाधा उत्पन्न कर रहे हैं। चाहते हैं तथा वादग्रस्त भूमि से वादीगण को बेदखल करना चाहते हैं। प्रतिवादीगण द्वारा यह अभिवचनित किया गया है कि वादग्रस्त भूमि पर उनका आधिपत्य है एवं वादग्रस्त भूमि से वादीगण का कोई संबंध नहीं है। वाद प्रश्न क्र० 1 की विवेचना से यह प्रमाणित है कि वादग्रस्त भूमि वादीगण के स्वत्व एवं आधिपत्य की है। प्रतिवादीगण द्वारा वादग्रस्त भूमि पर वादीगण के स्वत्व से इंकार किया जा रहा है ऐसी स्थिति में प्रकरण में आई साक्ष्य से यह भी प्रमाणित है कि प्रतिवादीगण द्वारा वादग्रस्त भूमि से वादीगण को अवैधानिक रूप से बेकब्जा करने का प्रयास किया जा रहा है ऐसी स्थिति में वादीगण स्थाई निषेधाज्ञा प्राप्त करने के अधिकारी हैं। अतः उक्त वाद प्रश्न भी वादीगण के पक्ष में प्रमाणित है।

वाद प्रश्न कमांक-3

25. उक्त वादप्रश्न के संबंध में प्रतिवादीगण द्वारा यह अभिवचनित किया गया है कि वादीगण द्वारा वादग्रस्त भूमि के बाजार मूल्य के आधार पर वाद का मूल्यांकन नहीं किया है एवं न्यायशुल्क अदा नहीं किया गया है अतः प्रस्तुत वाद प्रचलन योग्य नहीं है।

26. प्रकरण के अवलोकन से दर्शित है कि वादीगण वादग्रस्त कृषि भूमि की स्वत्व घोषणा एवं स्थाई निषेधाज्ञा प्राप्त किये जाने हेतु वाद प्रस्तुत किया गया है। वादग्रस्त भूमि कृषि भूमि है

12 व्यवहार वाद कमांक:-27ए/2015

अतः वादीगण द्वारा वादग्रस्त कृषि भूमि के लगान के बीस गुने के आधार पर वाद का मूल्यांकन कर तदनुसार स्वत्व घोषणा एवं स्थाई निषेधाज्ञा हेतु न्यायशुल्क अदा किया गया है। यहां यह भी उल्लेखनीय है कि न्यायालय फीस अधिनियम 1870 की धारा 7 (4) (सी) के अनुसार "घोषणात्मक डिक्री या आदेश अभिप्राप्त करने के वादों में जहां पारिणामिक अनुतोष प्रार्थित है वहां वादी इप्सित अनुतोष की रकम का कथन करेगा।" इस प्रकार स्वत्व घोषणा एवं स्थाई निषेधाज्ञा के वादों में वादी वाद का मूल्यांकन करने के लिए स्वतंत्र है।

27. प्रस्तुत प्रकरण में वादीगण द्वारा वादग्रस्त कृषि भूमि के लगान के बीस गुने के आधार पर वाद का मूल्यांकन कर तदनुसार स्वत्व घोषणा एवं स्थाई निषेधाज्ञा हेतु न्यायशुल्क अदा किया गया है। इस प्रकार वादी द्वारा वाद का मूल्यांकन उचित रूप से कर पर्याप्त न्यायशुल्क अदा किया गया है। फलतः उक्त वादप्रश्न वादी के पक्ष में प्रमाणित है।

वाद प्रश्न कमांक-4

28. उक्त वाद प्रश्न के संबंध में प्रतिवादीगण द्वारा यह अभिवचनित किया गया है कि वादीगण ने प्रकरण में कब्जा वापसी की सहायता नहीं चाही है। अतः प्रस्तुत वाद विनिर्दिष्ट अनुतोष अधिनियम की धारा 34 के अंतर्गत संचालन योग्य नहीं है।

29. उक्त वादप्रश्न के संबंध में प्रतिवादीगण द्वारा यह व्यक्त किया गया है कि वादीगण का वादग्रस्त भूमि पर आधिपत्य नहीं है तथा वादीगण द्वारा आधिपत्य वापसी की सहायता नहीं चाही गई है। अतः प्रस्तुत वाद विनिर्दिष्ट अनुतोष अधिनियम की धारा 34 के अंतर्गत प्रचलन योग्य नहीं है। यहां यह उल्लेखनीय है कि वादीगण ने अपने वादपत्र में वादग्रस्त भूमि पर उनका आधिपत्य होना बताया है एवं प्रकरण में आई साक्ष्य से यह प्रमाणित है कि वादग्रस्त भूमि वादीगण को मृतक पिरने से उत्तराधिकार में प्राप्त हुई है, चूंकि वादीगण ने अपने वादपत्र में वादग्रस्त जगह पर उनका आधिपत्य होना अभिवचनित किया है एवं वादग्रस्त भूमि पर वादीगण का स्वत्व एवं आधिपत्य प्रमाणित है, ऐसी स्थिति में वादीगण को पृथक से आधिपत्य वापसी की सहायता मांगने की आवश्यकता नहीं थी एवं यह नहीं माना जा सकता है कि कब्जे की सहायता न चाहे जाने के कारण प्रस्तुत वाद प्रचलन योग्य नहीं है। फलतः उक्त वादप्रश्न वादीगण के पक्ष में प्रमाणित है।

वाद प्रश्न कमांक-5

30. उक्त वाद प्रश्न के संबंध में प्रतिवादीगण द्वारा यह अभिवचनित किया गया है कि वादीगण द्वारा अवधि ब्राह्य वाद प्रस्तुत किया गया है। प्रकरण के अवलोकन से यह दर्शित है कि प्रकरण में वादीगण द्वारा स्वत्व घोषणा एवं स्थाई निषेधाज्ञा हेतु वाद प्रस्तुत किया गया है एवं वादीगण ने अपने वाद पत्र में वाद कारण दिनांक 25.10.2012 को उत्पन्न होना वर्णित किया है एवं वादीगण द्वारा यह वाद दिनांक 04.03.2013 को प्रस्तुत किया गया है इस प्रकार वादीगण द्वारा वाद कारण उत्पन्न होने के तीन वर्ष की अवधि के अंदर यह वाद प्रस्तुत किया गया है। वादीगण द्वारा वाद कारण उत्पन्न होने के पश्चात विहित समयावधि के अंदर यह वाद प्रस्तुत किया गया है। अतः प्रस्तुत वाद परिसीमा विधि से बाधित नहीं है। फलतः उक्त वादप्रश्न का निराकरण उसके निष्कर्ष अनुसार किया गया।

13 व्यवहार वाद क्रमांक:-27ए/2015

सहायता एवं व्यय

31. समग्र अवलोकन से वादीगण अपना वाद प्रमाणित करने में सफल रहे हैं। फलतः प्रस्तुत वाद निम्नानुसार जयपत्रित किया जाता है:-

1. यह घोषित किया जाता है कि मौजा इकाहरा में स्थित वादग्रस्त भूमि सर्वे क्र० 82 रकवा 0.280, सर्वे क्र० 83 रकवा 0.840, सर्वे क्र० 85 रकवा 0.350, सर्वे क्र० 98 रकवा 0.55, सर्वे क्र० 209 रकवा 0.140, सर्वे क्र० 211 रकवा 0.060 एवं सर्वे क्र० 815 रकवा 0.30 तथा मौजा टुडीला में वादग्रस्त भूमि सर्वे क्र० 137 रकवा 0.23, सर्वे क्र० 138 रकवा 0.15, सर्वे क्र० 139 रकवा 0.21, सर्वे क्र० 140 रकवा 0.22, सर्वे क्र० 638 रकवा 0.10, सर्वे क्र० 639 रकवा 0.81 के वादी क्र० 1 1/6 भाग, वादी क्र० 2 1/6 भाग, वादी क्र० 3 लगायत 5 1/6 भाग, वादी क्र० 6 लगायत 10 1/6 भाग, वादी क्र० 11 1/6 भाग एवं वादी क्र० 12 1/6 भाग के स्वत्व एवं आधिपत्यधारी हैं।

2. प्रतिवादीगण को स्थाई रूप से निषेधित किया जाता है कि वह वादग्रस्त भूमि पर वादीगण के आधिपत्य में हस्तक्षेप न तो स्वयं करे और न ही किसी अन्य से करावे।

32. प्रकरण का संपूर्ण वाद व्यय प्रतिवादीगण द्वारा वहन किया जावेगा

33. अधिवक्ता शुल्क प्रमाणित होने पर अथवा सूची अनुसार जो भी न्यून हो देय होगा।

तदनुसार जयपत्र निर्मित किया जावे।

स्थान - गोहद

दिनांक - 15/05/18

निर्णय आज दिनांकित एवं हस्ताक्षरित कर
खुले न्यायालय में घोषित किया गया।

मेरे निर्देशन में टंकित किया गया।

सही/-

(प्रतिष्ठा अवस्थी)

अतिव्यवहार न्यायाधीश वर्ग-1,
वर्ग-1 गोहद जिला भिण्ड म0प्र0

सही/-

(प्रतिष्ठा अवस्थी)

अतिव्यवहार न्यायाधीश वर्ग-1
वर्ग-1 गोहद जिला भिण्ड म0प्र0

सामान्य जानकारी हेतु प्रतिलिपि
(शासकीय / विधिक उपयोग हेतु अमान्य)

जानकारी हेतु प्र
विधिक उपयोग